

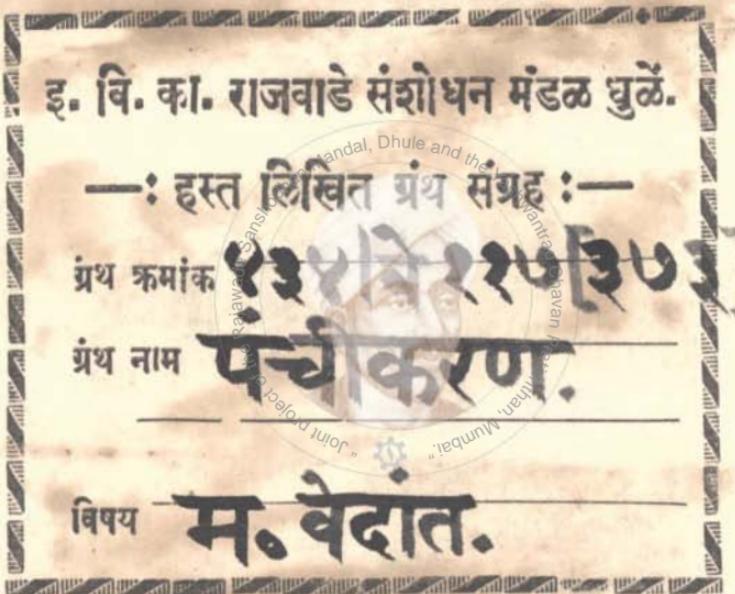
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—ः हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३४ से २२५ [३७]

ग्रंथ नाम **पंचोकरण.**

विषय **म. वेदांत.**

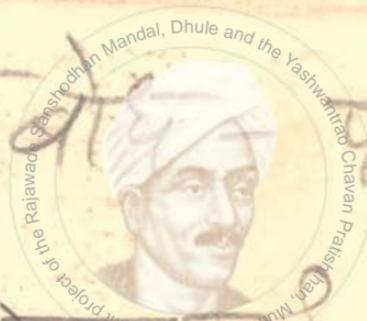


राजवा

-४५९८

संग्रहालय

राजवा



२११७१८२

२३४१६ + ९९६

(१)

॥ श्रीसद्गुरु सीतारामचंद्रायनमः ॥ नाभीपा ॥  
॥ सुनउन्मेशावृती ॥ तोचीपराजाणीजेश्रो ॥  
॥ ती ॥ ध्वनीरुपपश्यती ॥ हृदईवसे ॥ १ ॥  
॥ कंठपासुननादजाला ॥ मध्यमावाचा ॥  
॥ बोल्नीजेस्याला ॥ उद्धारहोताअक्षराला ॥  
॥ वेखरिबोलि जे ॥ २ ॥ नाभीस्वगानीपा ॥  
॥ रावाचा ॥ तोचीठावआंतःकण्ठाचा ॥

॥१॥ (२) आंतःकर्णपञ्चकाचा ॥ नीवाडारेसा ॥३॥  
॥ नीविकल्मजे स्फुरण ॥ उगेचआसता ॥  
॥ आठबण ॥ तेजाणाबेआंतःकर्ण ॥ जा ॥  
॥ प्रतीकका ॥४॥ आंतःकर्णआठबहु ॥ पु ॥  
॥ ठेहोयेनक्षेसे गमले ॥ करुनकरुसेवाट ॥  
॥ ले ॥ तेचीमन ॥५॥ संकल्पवीकल्मतेची ॥  
॥ मन ॥ जेणेकरीताआनुमान ॥ पुठेनी ॥

॥९॥

(2A)  
॥ श्वयते चीजाण ॥ रुप बुधीचे ॥ ६ ॥ करिन ॥  
॥ चीआधवानकरी ॥ ऐसानी श्वयोचीकरी ॥  
॥ तेचीबुधीहेआतरी ॥ बीवेके जाणावी ॥ ७ ॥  
॥ जेवस्तुचानी श्वयके ला ॥ पुढेतेचींचितु ॥  
॥ लागला ॥ तेचीत बोलो ल्याबोला ॥ येथा ॥  
॥ र्धमानावे ॥ ८ ॥ पुढेकार्यचाआभीमान ॥  
॥ धरणे ॥ हेकार्यतीआग स्वकरणे ॥ वेशा ॥

॥२॥ (३)  
॥ कार्य सप्रवर्तणे ॥ तोची आहे कार ॥ १॥ ऐसे ॥  
॥ आंतः कर्ण पचक ॥ पंच हृती सी कोन येक ॥  
॥ कार्य भागे प्रकारे पंचक ॥ वेग काले ॥ २॥  
॥ जैसे पाच ही प्राण ॥ कार्य भागे वेग काले ॥  
॥ जाण ॥ नाही तरी वयोचल क्षण ॥ येक ची ॥  
॥ आसे ॥ ३॥ जैसवागी आनना भी समान ॥  
॥ कंठिउ दृष्ट गुदी आपान ॥ मुखी नासी की ॥  
॥ प्राण ॥ नेमस्त जाणवा ॥ ४॥ बोलिले ॥ ५॥

(3A)

॥ माणपंचक ॥ आताज्ञानं इद्वियेपंचक ॥  
॥ श्रोतृत्वचाचक्षुजीहोनासीक ॥ ऐसेहेज्ञा ॥  
॥ न इद्विये ॥ ३ ॥ वाचापाणीपादसीस्त्वगुद ॥ ॥  
॥ हेकमि इद्विये प्रसीध ॥ शब्दस्पर्शिनुपरस ॥  
॥ गंध ॥ ऐसेहेकीषयपचक ॥ १४ ॥ ऊनःकणी ॥  
॥ माणपंचके ॥ ज्ञान इद्वियेकमि इद्वियेपंच ॥  
॥ क ॥ पाचवेविषयेपंचक ॥ ऐसीपाचपंच ॥  
॥ क ॥ १५ ॥

॥३॥ (५) ॥ रे से हे पंच विस गुण ॥ मी को न सुक्ष्म देह जाण ॥  
॥ मी को न ॥ या चाक द्वि म बोली ला श्रवण ॥ ॥  
॥ के ले पा ही जे ॥ १६ ॥ आत कर्ण व्यान श्रवण ॥  
॥ शब्द वीष्यो जाण आ काहा चा ॥ पुटे वीचा ॥  
॥ रवा यो चा बोली ला आ से ॥ मन स मान तचा ॥  
॥ पा णी ॥ स्पर्श रूप हा पवनी ॥ रे से हे आ डा ॥  
॥ रवे साधु नी ॥ को ठक रावा ॥ १७ ॥ बुधी उदा ॥  
॥ नन ये न चरण ॥ रूप विषय चेदशनि ॥ ॥३॥

(5A)

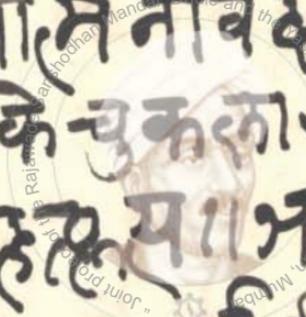
॥ संकेत बोली लामन ॥ धारुन पाही जे ॥ १९ ॥  
॥ चीत आपान जिक्हा सी स्न ॥ भरस वीष्ये आ ॥  
॥ पजाण ॥ ऐसे केले निरपण ॥ खूळा त्रमते ॥ २० ॥  
॥ ऐसा हासुक्ष्म देह ॥ पाहता हो इजेनीः संदह ॥  
॥ येथे मन धारुन पाह ॥ या सीचउ मजे ॥ २१ ॥  
॥ ऐसे सुक्ष्म देह बोली रु ॥ उठे स्तु क्ल निरोपीले ॥  
॥ आकाश पंचगुणि वर्तले ॥ कैसे स्तु की ॥ २२ ॥  
॥ काम क्रोधशोक मोहो भय ॥ हापंचवि ॥

॥४॥ (5) ॥धज्ञाकाशाचाआन्वय॥पुटेपंचविधज्ञा ॥  
॥वायो॥नीरोपीली॥२३॥चक्रणवक्रणप्रा ॥  
॥सारण॥नीरोधनत्ता नीआकोचन॥हे ॥  
॥पंचष्ववीधलक्षण॥प्रमंजनाचे॥२४॥  
॥क्षुधात्रृष्णाआलरनीद्रामैथुन॥हेतेजा ॥  
॥चंपंचविधगुण॥आलापुटेआपलक्ष ॥  
॥ण॥नीरोपीलेपाहीजे॥२५॥शुक्लीतश्रो ॥  
॥णीतलाळमुत्रघेद॥हीपंचष्वधआ ॥४॥



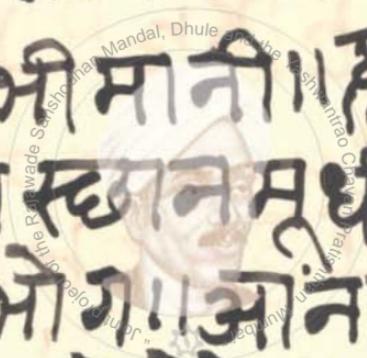
(5A) ॥ पाचाम्रेद ॥ पुठे पृथ्वी विषद ॥ केके पाही ॥  
॥ जे ॥ २६ ॥ आस्ती मां सहचाना डी रोम ॥ हेप्र ॥  
॥ अवीचे पंचवीध धर्म ॥ ऐसे स्वरूप देहाचे ॥  
॥ वर्म ॥ बोलीते आसे ॥ २७ ॥ पृथ्वी ओपते ॥  
॥ वायो आकाश ॥ हेपाचा चेपंचवीस ॥ ऐ ॥  
॥ से मीकोन स्वरूप दहास ॥ बोलि जेते ॥ २८ ॥  
॥ तीसरा देह कारण ओज्ञान ॥ चौथा देह ॥  
॥ माणुका रण ज्ञान ॥ हेच्या रीहु निर ॥

॥२॥ ६ सितावीज्ञान ॥ परब्रह्म शते ॥ २१ ॥ विचारे ॥  
॥ चौहावेगके केले ॥ मीपणत्वा सरि से ॥  
॥ गेले ॥ अनन्य आस नीवेदन जाले ॥ परब्रह्म ॥  
॥ ली ॥ ३० ॥ वीवेके चुकला जन्म मृत्यु ॥ नर ॥  
॥ देहि साधले महात्मा ॥ भक्ति योगे कृत्यकृ ॥  
॥ सर्वकांशिक जाले ॥ ३१ ॥ इतीशीषं वीकर्ण ॥  
॥ केले चीकरा वेवीवाणि ॥ लोहाचैजाले सूर्य ॥ ३२ ॥

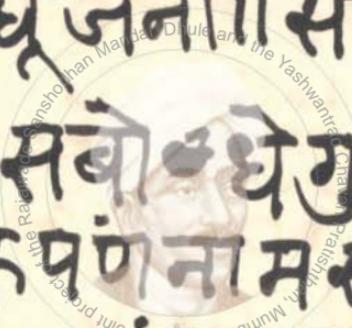


" Joint Project of Rajendra Varshodhan Mandal, Varanasi and the Pathwariya Archaeological Research Institute, Murthal "

6A  
॥ देहजाण ॥ जागृती स्वन्यस्तुषु पूर्णी ॥  
॥ त्रूयजाणावी ॥ ८ ॥ वीश्वते जस प्राइ ॥  
॥ प्रस्यगत्मा आभी मानी ॥ हृदयस्थानकं ॥  
॥ ठस्थन ॥ नेत्रस्थान सूर्धनी ॥ सूरक ॥  
॥ भोगप्रवीक्षभोग ॥ आनन्दभोग आनं ॥  
॥ दावभासभोग ॥ ये सेहेचत्वारभोग ॥ चौ ॥  
॥ दहचे ॥ ३ ॥ आकारउकारमकार ॥



॥ वर्ण ॥<sup>(7)</sup> परी साचेन यागे ॥ ३२ ॥ हाही हु छात ॥  
॥ घडेना ॥ परी साचेन परी सक रवेना ॥ ३३ ॥  
॥ रणजाता सा धूजना ॥ सा धूची हो ईजे ॥  
॥ ३४ ॥ ईतीश्रीदा सबो धे गुरु शिष सबादे ॥  
॥ चहारदेह निरुप अनाम समास ॥ १ ॥  
॥ श्रीसद्गुरु सिताराम चंद्रायन मः ॥ स्थूक ॥  
॥ सूक्ष्म कारण माहा कारण ॥ ऐसे हेचत्वार ॥ १६ ॥



(7A)

॥ देहजाण ॥ जागृती स्वन्तसुषुप्ती पूर्ण ॥ तू ॥  
॥ र्याजाणावी ॥ १ ॥ वीश्वते जस प्राइ ॥ प्रस ॥  
॥ गास्मा आभी मानी ॥ हृदय स्थन कंठ स्थण ॥  
॥ न ॥ नैव्र स्थान मृधनी ॥ २ ॥ स्थूक भोग ॥  
॥ प्रवीक भोग ॥ ओनहृती गआनं द्वाय भौ ॥  
॥ स भोग ॥ रेसे हैचतार भोग ॥ चौदेहाचे ॥ ३ ॥  
॥ आकार उकार मकार ॥ आर्धमात्रातो ॥  
॥ ईश्वर ॥ रेश्या मात्राचतार ॥ चौदेहाच्या ॥ ४ ॥

"॥७॥" (8) "॥तमोगुणरजोगण॥ सत्यगुणशुद्धसत्त्वगु  
॥८॥ ऐशोहेचत्वारगुण॥ चौदेहाचै॥ ५॥ क्रि  
॥याशक्तीद्रव्याशक्ती॥ इच्छाशक्तीज्ञानाश॥  
॥क्ती॥ ऐशाद्याचत्वारशक्ती॥ चौदेहाव्य॥ ६॥  
॥ऐसीहेबतीसत्त्वै॥ दाहीचीपन्नासत्त्वै॥  
॥आवधीमीकोनव्याेसीत्वै॥ आज्ञान  
॥आणीज्ञान॥ ७॥ ऐसीहेत्वैजाणावी॥ ८॥

॥जाणोनीमाईकबोकरवावी॥आपण॥  
॥साक्षीनिरसावी॥यणेरिती॥६॥सा॥  
॥क्षीष्मणीजेज्ञान॥ज्ञानेबोकरवावेआही॥  
॥ज्ञान॥ज्ञानआज्ञानाचेनिर्झनदैहास॥  
॥रीसे॥९॥ब्रंह्माउद्दिदेहकल्पीले॥वीरा॥  
॥टुरण्यगर्भबोलीले॥तेहीवीवेके॥  
॥निर्झल॥आल्लाज्ञाने॥१॥आस्तिमां॥

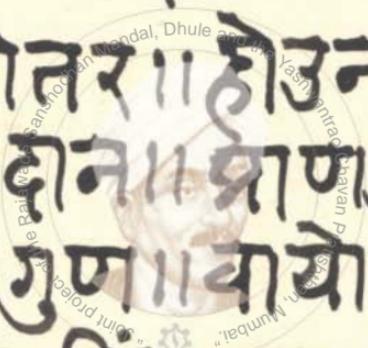
(8A)

"॥८॥ (१९)

॥ सहचानाडिरोम ॥ हे पृथ्वीचेगुणधर्म ॥  
॥ म्रसक्षशरीरीहेवस्ति ॥ शाधुनपाहावे ॥ ११ ॥  
॥ आत्मानासावीकैककरीता ॥ सारासार ॥  
॥ विचारपाहाता ॥ पंचभूताचीमाईकवा ॥  
॥ ती ॥ म्रचीतआदी ॥ १२ ॥ शुक्लीतश्रोणी ॥  
॥ तलाळसूत्रस्वेद ॥ हे ओपा ॥ चंचपंचमेद ॥  
॥ तवेसमज्ञोनवीषदकरुनध्यावी ॥ १३ ॥  
॥ क्षूधावृषाआळस्यनीक्रामैयुन ॥ हे पा ॥ १४ ॥

॥ चहीते जावे गुण ॥ यात्तवाच्ये निरूपण ॥  
॥ केलै पाहीजे ॥ १४ ॥ चक्रणवक्रण प्रासा ॥  
॥ रण ॥ निरोधन आणि आकोचन ॥ हैपा ॥  
॥ चहीवायो चे गुण ॥ १५ ॥ कामक्रोध ईशो ॥  
॥ कमै हो भय ॥ लाआकाशा चापरियाये ॥  
॥ हेवी वरुल्लावीणकाया ॥ समजो जाणे ॥ १६ ॥  
॥ आसो ऐसे स्थूक हारीर ॥ पंचवीस तत्त्वाचा ॥  
॥ वीस्तार ॥ आता सुक्ष्मदेह चाविचार ॥

॥१॥ (१०) ॥  
॥ बोली जेल ॥ १७ ॥ आंतः कर्ण मन वुधी चीत ॥  
॥ आहं कार ॥ आकाश पंचका चांची चार ॥  
॥ पुढे वायो नीरोतर ॥ हृउन ऐका ॥ ८१६ ॥  
॥ व्यान समान उदान ॥ प्राण आणी आपान ॥  
॥ ऐसे हेपाच हिगुण ॥ वायो तत्वाचे ॥ १९ ॥  
॥ श्रोत्र त्वचाच क्षुजी काघण ॥ हेपाच हीते जा ॥  
॥ चेगुण ॥ आता आपसा वधान ॥ हृउन ऐका ॥  
॥ २० ॥ वाचा पाणी पादसी रुगुद ॥ हेआपाचे ॥ ११



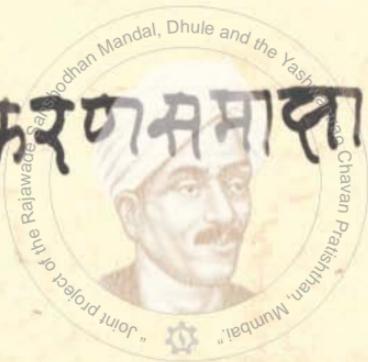
॥ गुणप्रसिध्य ॥ आतापृथ्वीवीषद् ॥ नीरो ॥  
॥ पीली ॥ २१ ॥ शब्दस्पृकिपरसंगध ॥ हेपृ ॥  
॥ श्वीचेगुणविषद् ॥ रेसेहेपंचवीसत्यमे ॥  
॥ द ॥ सूक्ष्मदेहाचै ॥ २२ ॥ इतीश्वीदासबोधे ॥  
॥ गुरुनीषसंवादै ॥ तनुचतुष्येनीरुपण ॥  
॥ नामसमास ॥ नवम ॥ ९ ॥ श्रीसीताराम ॥  
॥ चद्रार्पणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ ४७ ॥

(१०A)

119011

(१)

॥पंचीकरणसमाप्ता ॥



119011



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)